राजा राममोहन राय

-पं. श्रीराम शर्मा आचार्य

समाज-सुधार के अग्रदूत— राजा राममोहन राय

उन्नीसवीं सदी का समय भारतवर्ष के इतिहास में महान् परिवर्तनों का था। मुसलमानों का भारतव्यापी शासन टूट-फूटकर लगभग निर्जीव हो चुका था और उसका स्थान दूरवर्ती इंगलैंड ग्रहण कर रहा था। अंग्रेज शासक अपनी सेना और तोप-बंदूकों के साथ अपनी सभ्यता, संस्कृति और धर्म को भी लाये थे और इस बात के प्रयत्न में थे कि यहाँ के निवासियों में इनका प्रचार करके अपनी जड़ मजबूत की जाये। मुसलमानों ने भी हिंदुओं को अपने धर्म में दीक्षित करने की चेष्टा की थी, पर उनके साधन मुख्यतः तलवार और तरह-तरह के उत्पीड़न थे। इसके विपरीत अंग्रेजों ने अपने धर्म को शस्त्र-बल से थोपने की नीति से काम नहीं लिया, वरन् युक्ति, तर्क और प्रमाणों से ईसाई-धर्म की श्रेष्ठता और हिंदू-धर्म की हीनता सिद्ध करने का प्रयत्न किया और उनको अपने इस प्रयत्न में सफलता भी मिली।

इसका कारण यह नहीं था कि ईसाई-धर्म के सिद्धांत अथवा उसका तत्त्वज्ञान हिंदू-धर्म की अपेक्षा उच्च कोटि का था। जो धर्म हजारों वर्ष पहले 'वेदांत' सिद्धांत के रूप में सृष्टि रचना के एकमात्र कारण 'परंब्रह्म' की विवेचना कर चुका था और इस अखिल विश्व के अनादि और अनंत होने की घोषणा कर चुका था, उसकी तुलना ईसाई धर्म से कैसे की जा सकती थी ? जो एक शरीरधारी ईश्वर द्वारा पाँच हजार वर्ष पहले सात दिन के भीतर इस दुनिया का निर्माण किए जाने पर विश्वास रखता था। भारतीय मनीषियों ने संसार को वेद और उपनिषदों का जो गंभीर ज्ञान दिया, उसकी समता 'बाईबिल' की कथाओं से, जिनमें ईसा के थोड़े से चमत्कार और राजाओं के किस्से ही पाये जाते हैं, कैसे की जा सकती थी ? पर वास्तविक बात यह थी कि इस समय हिंदू जाति अपने पूर्वजों

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

की उस अपूर्व देन को भुला बैठी थी और उसके स्थान में थोड़े-से भ्रमपूर्ण पूजा-उपासना, कर्मकांडों को ही धर्म का सार समझ बैठी थी। यद्यपि वे अपने को राम, कृष्ण के वंशधर और अनुयायी कहते थे, पर स्वयं राम, कृष्ण अपने जीवन काल में जिस 'परम तत्त्व' का ध्यान और जप करते थे, उसको वे भूल गये थे और राम-कृष्ण की मूर्तियों को ही साक्षात् परमेश्वर मान लिया था।

ऐसे समय में ईसाई धर्मोपदेशकों ने यहाँ के धर्म की जराजीर्ण अवस्था को देखा और अधिकांश भारतवासियों को अर्द्ध-सभ्य लोगों की तरह सैकड़ों प्रकार के अद्‌भुत देवी-देवताओं की पूजा करते, देवी-देवताओं का विवाह करते, उनके सामने बकरे, भैंसे तथा अन्य जीव-जंतुओं का बलिदान करते पाया गया। यह भी देखा कि ये लोग हजारों हिस्सों में बँटे हुए हैं, एक-दूसरों को ऊँच-नीच समझते हैं और इसलिए इनमें बहुत अधिक फूट फैली हुई है। यह दशा देखकर उन्होंने इस देश में अपने धर्म-प्रचार की आशा से जोर-शोर से काम करना आरंभ किया और वे आशा करने लगे कि वह दिन दूर नहीं है, जब समस्त हिंदू जाति ईसा के झंडे तले एकत्रित हो जायेगी। इस स्थिति का वर्णन करते हुए श्री गंगाप्रसाद जी उपाध्याय ने अपनी पुस्तक—"राममोहन राय, केशवचंद्र सेन और स्वामी दयानंद" में लिखा है—

"जब से मुसलमानों और ईसाइयों का देश पर अधिकार हुआ, नैतिक परिवर्तनों के साथ-साथ धार्मिक विचारों में भी उथल-पुथल हुई। बाहर से आने वालों ने हिंदू-धर्म के इस जर्जरित वृक्ष को देखा और परामर्श दिया कि इस प्राचीन, सूखे, फलरहित, अनावश्यक, भार रूप झाँकर को रखने से क्या लाभ ? इसको उखाड़ क्यों नहीं फेंकते और इसके स्थान में एक ताजा, होनहार, 'चिकने-चिकने पात' वाला बिरवा क्यों नहीं लगा लेते ?

"इस परामर्श का भिन्न-भिन्न लोगों ने भिन्न-भिन्न प्रकार से स्वागत किया। कुछ कहते थे—ठीक तो है, शक्ति का अपव्यय करने से क्या लाभ ? बाप का कुआँ है इसलिए ही पानी पियेंगे, चाहे खारी ही क्यों न हो, यह तो बुद्धिहीनता है। इस खारे कुएँ को छोड़ो

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

और मीठे कुएँ का पानी पियो।" ऐसे लोग ईसाई होने लग गये। परंतु बहुतों को यह सूखा वृक्ष ही प्यारा था। वे कहते थे—

यही आस अटक्यो रहै, अलि गुलाब के मूल।
अइहैं बहुरि वसंत ऋतु, इन डारन वे फूल।।

"ईसा की उन्नीसवीं सदी के आरंभ में हिंदू-धर्म की यही अवस्था थी। अंग्रेजी राज्य भारत के कुछ भागों में स्थापित हो चुका था और कुछ में हो रहा था। इनमें से बंगाल ही सबसे पहले अंग्रेजी संस्कृति से प्रभावित हुआ। बंगालियों ने ही सबसे पहले अंग्रेजी सीखी, बंगाल में ही ईसाई-धर्म सबसे पहले फैला।"

एक ब्रह्मोपासना का प्रचार—

राजा राममोहन राय (सन् १७७४ से १८३३) इस संक्रातिकाल में उत्पन्न हुए थे। वे जन्म से कट्टर वैष्णव थे और बाल्यावस्था में 'भागवत्' का पाठ करके ही भोजन करते थे। पर जब उन्होंने हिंदू धर्म की इस गिरती हुई दशा को देखा और ईसाई-धर्म को दिन पर दिन उन्नति करते पाया, तो उनका मनोभाव बदलने लगा। उन्होंने समझ लिया कि यदि हिंदू-धर्म में थोड़ी-सी प्रचलित रीति-रिवाजों का ही नाम है और बिना सोचे-समझे केवल मूर्तियों को सिर झुका देना, उन पर कुछ फूल-पत्ता चढ़ा देना, बताशों और लड्डुओं का भोग लगा देना ही इस धर्म का मुख्य लक्षण है तो इसका अंत हो जाना ही अच्छा है। पर उनका हृदय हिंदू धर्म के ऐसे बिगड़े हुए रूप को सच्चा धर्म मानने को तैयार न था। उन्होंने वेदों और उपनिषदों का अध्ययन किया था और वे उनके उच्च तत्त्वज्ञान से परिचित थे। इसलिए वे उन्हीं उच्च सिद्धांतों को प्रकाश में लाने का विचार करने लगे।

उनके हृदय में भारतीय संस्कृति के प्रति अगाध श्रद्धा थी और जाति-प्रेम भी कम न था। इसलिए उनको यह सहन न हो सका कि एक विदेशी धर्म, जिसमें बाह्य गुणों के सिवा गंभीर दार्शनिक तत्त्वों का बहुत अभाव है, हिंदू धर्म को पददलित करें। साथ ही प्रचलित धर्म में भी उनको यह शक्ति दिखाई नहीं पड़ती थी, जो इन प्रबल आक्रमणों को सहन कर सके।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

राममोहन राय इन तथ्यों पर विचार करके इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि जब तक हिंदू-धर्म का नव-संस्कार—सुधार नहीं किया जायेगा, तब तक न तो वह अन्य धर्मों के आक्रमण से अपनी रक्षा कर सकेगा और न अपने देश और संसार की उन्नति में कुछ सहयोग दे सकेगा। यह निश्चय करके उन्होंने उस समय प्रचलित मूर्ति-पूजा के दोष दिखलाना आरंभ किया और "हिंदुओं की पौत्तिक धर्म-प्रणाली" नाम की पुस्तक लिखी। उनके ऐसे विचार देखकर उनके धर्मभीरू पिता श्री रामकांत राय उनके विरुद्ध हो गये और आपस में वैमनस्य होने लगा। जब राममोहन राय अपने विचारों को छोड़ने को तैयार न हुए और मूर्ति-पूजा के विरुद्ध उनके विचारों की सर्वसाधारण में बुराई होने लगी, तो रामकांत ने उनको 'अधर्मी' कहकर घर से निकाल दिया। उस समय उनकी आयु केवल सोलह वर्ष की थी।

मूर्ति पूजा के विरोध पर गृह त्याग—

घर से निकलकर राममोहन भारतवर्ष के विभिन्न भागों में भ्रमण करने और भारतीय धर्म के संबंध में विशेष ज्ञान प्राप्त करने लगे। पंजाब में उन्होंने गुरुमुखी भाषा सीखकर सिक्खों के धर्म ग्रंथ पढ़े, फिर हिंदी का अभ्यास करके दादू और कबीर के धर्म-सिद्धांतों का अध्ययन किया। अंत में उनकी इच्छा बौद्ध-धर्म का रहस्य जानने की हुई और वे हिमालय को पार करके तिब्बत जा पहुँचे। वहाँ उन्होंने बौद्ध-धर्म ग्रंथों का अध्ययन तो किया, पर अपनी प्रकृति के अनुसार वहाँ की जनता में प्रचलित अंधविश्वासों का विरोध भी करते रहे। वहाँ के अनेक धर्मांध पुरुष इस पर इनको मारने को तैयार हुए, पर कुछ स्त्रियों ने उनकी थोड़ी उम्र पर तरस खाकर रक्षा की। इस घटना के फलस्वरूप नारी जाति की सहृदयता का उन पर बड़ा प्रभाव पड़ा और वे आगे चलकर अपने लेखों तथा भाषणों में सदैव स्त्री-जाति के गुण गाते रहे।

तिब्बत से लौटने पर इनके पिता ने इनको फिर रख लिया, पर इनका प्रचार कार्य बढ़ता ही गया। कुछ समय पश्चात् पिता का देहांत हो गया तो ये इस कार्य को और भी जोर से करने लगे। इससे उनके

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सभी पास-पड़ोसी और अन्य अंधविश्वासी मनुष्य उनके विरोधी बन गये। वे मूर्ति-पूजा का खंडन करके ब्रह्म-ज्ञान का प्रचार करते थे, इससे चिढ़कर रामजय नामक व्यक्ति ने, जो पास ही के गाँव में रहता था, जो चार-पाँच हजार मनुष्यों का मुखिया था, इनको तंग करना आरंभ किया। वह रात में इनके घर के सामने ढेरों कूड़ा-कचरा, मैला फिकवा देता था। बर्तनों में भरकर मल-मूत्र, गाय की हड्डियाँ आदि घर के भीतर फेंक दी जाती थीं। राममोहन तो ऐसी बातों की कुछ भी परवाह नहीं करते थे और इन मूर्खताओं पर हँसते रहते थे, पर उनके घर वाले बहुत तंग होते थे। ये घटनायें राममोहन के 'धर्म-विरोधी' विचारों के कारण होती हैं, इसलिए वे इनसे असंतुष्ट भी होते थे। जब मामला बहुत बढ़ गया, तो इनकी माता श्रीमती फूलठकुरानी ने, जो घर की समस्त जमींदारी का प्रबंध करती थीं, इनको घर से निकाल दिया। पर वे इससे भी नहीं घबड़ाये और गाँव से बाहर श्मशान के पास अपने लिए एक पृथक् मकान बनवा कर उसमें रहने लगे। उस पर उन्होंने अपने सिद्धांत को प्रकट करने के लिए वेदांत-शास्त्र का **"ओ३म् तत्सत् एकमेवाद्वितीयम्"** वाक्य मोटे अक्षरों में लिखवा दिया था। इतना सामाजिक अत्याचार सहकर भी वे अंधविश्वासों द्वारा पूजी जाने वाली अनगिनत मूर्तियों को 'परमात्मा' मानने को तैयार न हुए और "एक सर्वव्यापी ब्रह्म" का ही प्रचार करना उन्होंने अपने जीवन का व्रत बना लिया।

धर्म के सच्चे स्वरूप पर विवाद—

कुछ समय बाद वे अपने सिद्धांतों का अच्छी तरह से प्रचार करने के लिए कलकत्ता चले आये और एक छोटा-सा मकान लेकर लेखों और पत्रिकाओं द्वारा अपने मंतव्य का सर्वत्र प्रचार करने लगे। अब तो समस्त बंगाल में शोर मच गया और लोग प्रचलित धर्म के विरुद्ध बातों को सुनकर राममोहन पर 'नास्तिक', 'पापी', 'अधर्मी', जातिबहिष्कृत' आदि अपशब्दों की बौछार करने लगे। पर ये आक्षेप करने वाले कैसे 'धर्मात्मा' थे और उनका धर्म किन बातों में समाया था ? उसका वर्णन करते हुए एक स्थान पर कहा गया है—

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

"उस समय सारा देश ही अज्ञान में डूब रहा था। मूर्ति-पूजा का बाह्य रूप ही उसकी नस-नस में घुस रहा था। लोग 'वेद' का नाम तो लेते थे, पर उसमें क्या है ? यह किसी को मालूम न था। उपनिषदों से भी लोग अनजान थे। केवल दुर्गा देवी की पूजा में भैंसों-बकरों का बलिदान, श्रीकृष्ण और राधा बनाकर लड़कों को नचाना, सावन-भादों में झूले डालकर उत्सव करना, धूमधाम के साथ ठाकुर जी का रथ निकालना—ये ही हिंदुत्व के मुख्य चिह्न थे और इन्हीं को लोग शास्त्रों का बतलाया 'धर्म' समझने लगे थे। गंगा-स्नान करने से, साधु-ब्राह्मणों को दान देने से, तीर्थों में भ्रमण करने से, अन्न-जल छोड़कर व्रत करने से पाप दूर हो जायेंगे, यह लोगों का विश्वास था। इन्हीं बातों में पवित्रता और पुण्य माना जाता था। सबको इन्हीं बातों पर विश्वास था और इनके विरुद्ध कोई एक शब्द भी अपनी जुबान से नहीं निकाल सकता था।"

"छुआछूत का विचार धर्म का सबसे ऊँचा अंग माना जाता था।" यह भाव उस समय यहाँ तक बढ़ा हुआ था कि अंग्रेज सरकार के दफ्तरों में नौकरी करने वाले व्यक्ति दफ्तर से लौटने पर पहले 'म्लेच्छों' से छुए कपड़े घर के बाहर उतार देते थे, फिर स्नान-पूजा करके जलपान कर सकते थे। अगर कभी कोई स्नान-पूजा न कर पाता तो वह पुरोहित को दंडस्वरूप कुछ भेंट करता था, जिससे उसका पाप धुल जाये। उस समय के पुरोहित, ब्राह्मण, जीते-जागते अखबार थे। स्नान करके तिलक छापा लगाकर ये लोग संसार भर की बातें घर-घर जाकर सुनाया करते थे। इन समाचारों में देश भर के दानदाताओं की नामावली होती थी। किसने कितना धन लगाकर दुर्गा पूजा की अथवा श्राद्ध किया ? इसका पूरा वर्णन रहता था। बहुत बार दानियों की प्रशंसा में श्लोक बनाकर भी सुनाये जाते थे। इसलिए बुराई के डर से और यश की इच्छा से लोग इन लंबी चोटी वाले 'पंडितों' को खूब दान देते थे। ये लोग छोटी जाति वालों के गुरु बनकर, उनको अपना 'चरणामृत' पिलाकर भी खूब धन पैदा करते थे। ये लोग रात-दिन धर्म का शोर मचाते रहते थे, किंतु वेदशास्त्र का एक अक्षर भी न जानते थे। यहाँ तक कि बहुत से तो नित्यप्रति संध्या करते हुए उसका अर्थ तक नहीं समझते थे।"

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ऐसी दशा में राममोहन जैसे सर्वप्रथम समाज-सुधारक को अगर लोगों का विरोध सहन करना पड़े तथा हर तरह के अनुचित आक्षेपों को सुनना पड़े तो इसमें आश्चर्य की क्या बात है ? उनकी मूर्ति-पूजा विरोधी बातों को सुनकर लोग चौंक पड़े और ऊटपटाँग बातें बकने लगे। बड़े लोगों की बैठकों में, पंडितों की पाठशालाओं में, गाँवों के मंदिरों में राममोहन राय की चर्चा सुनाई पड़ने लगी। स्त्रियाँ तक मूर्ति-पूजा और श्राद्ध के विषय में इन नई बातों को लेकर कानाफूसी करने लगीं। एक प्रकार से बंगाल की समस्त हिंदू-जाति ही उनकी विरोधी बन गई।

पर राममोहन इन बातों से घबड़ाने वाले न थे। वे जानते थे कि जो व्यक्ति किसी भी समय में प्रचलित हानिकर और अंधविश्वासपूर्ण रीति-रस्मों का निराकरण करने को खड़ा होता है, उसे स्वार्थीजनों तथा अज्ञानग्रस्त जनता का ऐसा ही विरोध सहन करना पड़ता है। इसलिए वे अपने विरोधियों पर किसी तरह का गुस्सा अथवा आक्षेप न करके बड़े प्रेम और नम्रता से अपनी बातें बार-बार समझाते ही रहते थे। सत्य पर उन्हें बड़ा विश्वास था, ईश्वर पर उनकी दृढ़ श्रद्धा थी, पुनर्जन्म पर उनको पूरी आस्था थी। इन गुणों के कारण वे अनेक समझदार लोगों को अपनी तरफ आकर्षित कर लेते थे।

'वेदांत भाष्य' का प्रकाशन—

अब उन्होंने व्यवस्थित रूप से अपने सिद्धांतों का प्रचार करना आरंभ किया। वे चार प्रकार से इस कार्य को करते थे—(१) बातचीत, व्याख्यान और शास्त्रार्थों से, (२) विद्यालय स्थापित करके, (३) पुस्तकें लिखकर, (४) सभाएँ और संस्थाएँ स्थापित करके। सबसे पहले उन्होंने वेदव्यास रचित 'वेदांत सूत्र' का भाष्य बंगला भाषा में लिखकर छपवाया। शंकराचार्य का लिखा इन सूत्रों का भाष्य, देश भर में प्रसिद्ध था ही पर राममोहन चाहते थे कि इस प्राचीन शास्त्र के द्वारा ही एक ब्रह्म की उपासना सिद्ध की जाये, जिससे धर्म व्यवसायी पंडितों को ज्यादा बोलने का मौका

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

न रह जाये। इस ग्रंथ में उन्होंने जिन विशेष सिद्धांतों का प्रतिपादन किया था, वे इस प्रकार हैं—

"(१) वेद एक निराकार, व्यापक परमात्मा की ही उपासना करने को कहता है। (२) रूप और आकार रहित परमात्मा की भी उपासना की जा सकती है। (३) ऊपरी दिखावटी बातों से परमार्थ की प्राप्ति नहीं हो सकती, मोक्ष केवल ज्ञान से ही होता है। (४) लोग कहते हैं कि ब्रह्मज्ञानी को अच्छे-बुरे सुगंध का ज्ञान नहीं रहता, यह अज्ञान की बातें हैं। (५) पुराणों और तंत्रों में जो साकार उपासना का उपदेश दिया गया है, वह बाल-बुद्धि वाले लोगों के लिए है, ज्ञानियों के लिए एक मात्र ब्रह्म की उपासना ही सत्य है।"

स्वार्थी पंडितगण समझते थे कि इस प्रकार की बातों के फैलने से उनकी रोजी पर आघात लगेगा और फिर लोग बात-बात पर उनको दान-दक्षिणा नहीं देंगे। इसलिए लोगों को इन बातों के विरुद्ध तरह-तरह से भड़काते रहते थे और उनको उलटे-सीधे सिद्धांत समझाकर राममोहन राय का विरोधी बनाने की चेष्टा करते थे। ऐसे लोग जब उनके पास आकर पंडितों की कही हुई बातों को सुनाते थे, तो वे सहज और सरल ढंग से उनका समाधान कर देते थे।

राममोहन राय द्वारा शंका समाधान—

सबसे पहली शंका लोग यही करते थे कि यदि हम परमात्मा को बिना शकल-सूरत वाला मान लें, तो हम उसका ध्यान कैसे कर सकते हैं ? इसके उत्तर में राम मोहनराय ने उनको समझाया कि अगर कोई बच्चा पैदा होते ही दुश्मनों के हाथ में पड़ जाये और उसे अपने पिता की शकल देखने का मौका न मिला हो तो वह अपने पिता का ध्यान कैसे करेगा ? वह प्रार्थना करता हुआ यही कहेगा कि जिसने मुझे जन्म दिया है, मैं उनकी वंदना करता हूँ। इसी प्रकार मनुष्य निराकार परमात्मा की प्रार्थना कर सकता है। जो यह कहते हैं कि निराकार की उपासना हो ही नहीं सकती, वे संसार पर निगाह डालकर देखें। ईसाई और मुसलमान, जो संख्या में हमसे बहुत अधिक हैं, निराकार की ही उपासना करते हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उनके सामने दूसरा तर्क यह उपस्थित किया जाता था कि "हमारे सब भाई-बंधु एक ही तरह की उपासना करते हैं, यदि हम दूसरी तरह की करेंगे तो उनसे अलग हो जायेंगे, फिर जो रीति बाप-दादों से चली आई है उसका पालन करना ही चाहिए।" इसके उत्तर में राममोहन राय कहते थे कि एक-एक कुल न मालूम कितनी बार विष्णु का उपासक, कितनी बार शिव का उपासक, कितनी बार शक्ति (देवी) का उपासक बना है ? वाममार्गी हिंदुओं को बुद्धदेव ने बौद्ध बना लिया था, फिर शंकराचार्य ने उनको ब्रह्म का उपासक बना डाला, फिर वे ही तरह-तरह के अन्य देवताओं के और अवतारों के उपासक बन गये। वास्तव में लोग जब अपनी भूल जान जाते हैं, तब पहले की बातें छोड़कर नई और उपयोगी बातें सदा से ग्रहण करते चले आये हैं। कुछ समय पहले लोग फारसी और अंग्रेजी भाषाओं को 'म्लेच्छ-भाषा' कहकर सीखना पाप समझते थे, पर बाद में उन्हें उपयोगी समझकर सीखने लगे। तब परलोक और इस लोक को सुधारने वाला रास्ता अपनाने में ही रीति-रिवाज का अड़ंगा क्यों लगाया जाये ?

पंडित लोग फिर लोगों को बहकाते कि "जो 'ब्रह्मज्ञानी' होता है उसे सुगंध-दुर्गंध का ज्ञान नहीं रहता, आग-पानी में भेद नहीं दीखता, अपने-पराये की पहचान नहीं रहती।" राममोहन राय समझाते हैं कि—"भाई, ये लोग किस आधार पर ऐसा कहते हैं ? पंडित लोग यह भी कहते हैं कि नारद, जनक, शुकदेव, वशिष्ठ, व्यास, कपिल, जैमनी आदि ब्रह्मज्ञानी थे। पर ब्रह्मज्ञानी होते हुए भी वे आग को आग और पानी को पानी ही मानते थे। वे लोग गृहस्थ भी थे, राज्य भी करते थे और शिष्यों को योग्यतानुसार उपदेश भी करते थे। फिर कैसे मान लिया जाये कि एक ब्रह्म के उपासक को अच्छे-बुरे का ज्ञान ही नहीं होता ?"

पर पंडित लोगों का तो काम ही लोगों को बहकाकर पेट भरना था। वे कहते थे कि "जब पुराणों और तंत्रों में सूरत, शकल (आकार वाले) परमेश्वर की उपासना लिखी है, तब हम बिना सूरत-शकल वाले ब्रह्म की उपासना में हाथ ही क्यों डालें ?" राममोहन राय कहते थे कि "जिन पुराणों और तंत्रों में परमात्मा की

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पृथक्-पृथक् शकलें मानकर उनकी पूजा करने की बातें लिखी हैं, उन्हीं पुराण व तंत्रों में जहाँ ज्ञान का विषय आया है, वहाँ साफ लिखा है कि उस परमात्मा का न कोई रूप है न रंग। वह बिना रूप-रंग और सूरत-शकल वाला अनादि, अनंत और सर्वव्यापक है। पुराणों में जहाँ कहीं किसी सूरत-शकल वाले ईश्वर का ध्यान करना लिखा है तो केवल इसलिए कि कमजोर दिल वाले मनुष्यों का चित्त इधर-उधर डाँवाडोल होने से बचकर वे स्थिर रहना सीखें। फिर भी जो मूर्तियों की पूजा और ध्यान करते हैं, उनसे पूछना चाहिए कि वे उन्हें साक्षात् ईश्वर समझते हैं या ईश्वर की शकल ? मूर्तियों की उपासना करने वाले भी उनको साक्षात् ईश्वर कहने में संकोच करेंगे, क्योंकि वे आदमियों के हाथ की बनाई हुई होती हैं और एक दिन नष्ट भी हो जायेंगी। ऐसी चीज 'ईश्वर' कैसे हो सकती हैं ? इसलिए मनुष्य को मूर्तियों की पूजा करने को ही धर्म अथवा ईश्वरोपासना का अंतिम लक्ष्य नहीं समझ लेना चाहिए, वरन् उपनिषदों और वेदांत-शास्त्र का अध्ययन करके सर्वव्यापक परमात्मा के ध्यान का अभ्यास करना चाहिए।

इस तरह राममोहन राय उस समय अंधकार में पड़ी जनता का समाधान करके उसे समयोपयोगी मार्गदर्शन कराते थे, जिससे वे धर्म की दृष्टि से मनस्वी और बलिष्ठ बनकर विधर्मियों और विपक्षियों के बौद्धिक आक्रमण का मुकाबला कर सकें। उस समय लोग सब बातों में 'शास्त्र' की दुहाई देते थे और पंडित-पुजारी भी उनको 'शास्त्र' के नाम पर ही बहकाते थे। इसलिए वे भी अपनी बातों को शास्त्र द्वारा सिद्ध करने की ही कोशिश करते थे। उन्होंने धर्म का पेशा करने वाले 'पंडितों' की अपेक्षा शास्त्रों को बहुत ज्यादा पढ़ा था और उनके गूढ़ आशय को भी समझा था, इसलिए अंत में पंडितों को ही निरुत्तर होना पड़ता था।

पंडितों के सिखाये हुए लोग उनके पास आकर यह शंका करते थे कि वेद का अनुवाद बंगाली भाषा में न होना चाहिए, क्योंकि इससे शूद्र भी उसे सुनने और समझने लगेंगे और पाप के भागी बनेंगे। राममोहन राय ने कहा— "पंडित लोग अपने शिष्यों को वेद, उपनिषद, स्मृति आदि पढ़ाते समय उनका अर्थ बंगाली भाषा में

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

क्यों समझाते हैं ? यदि बंगाली भाषा में समझाना बुरा नहीं, तो उसी बात को बंगाली भाषा में लिखना कैसे बुरा माना जा सकता है ?

'धर्म-सुधार के लिए प्रबल प्रयत्न—

इस प्रकार राममोहन राय के धर्म सुधार-कार्य में उन्हीं के भाई-बंधु पंडितगण जहाँ तक बना, बाधायें डालते गये और उन्हें हर तरह से हानि पहुँचाने का प्रयत्न करते रहे। पर जो महापुरुष आत्मा की आवाज सुनकर लोक-कल्याण का व्रत ग्रहण कर लेते हैं, वे ऐसे विघ्नों से घबड़ाते नहीं और कष्टों को अपनी सचाई की परीक्षा मानते हैं। स्वयं राममोहन राय ने 'वेदांत सूत्र-भाष्य' के अंग्रेजी भाषांतर की भूमिका में लिखा है—

"ब्राह्मण वंश में जन्म लेकर मैंने इस देश को सुधारने के लिए जो सत्य और ज्ञान का रास्ता पकड़ा है, उससे मेरे वे भाई-बंधु दुश्मन बन गये हैं, जिनका पेट मूर्खतापूर्ण रीति-रिवाजों के कारण ही पलता था। पर कुछ भी हो, मैं ऐसे ही धीरज और विश्वास के साथ सब कुछ सहूँगा और एक दिन ऐसा जरूर आवेगा, जब मेरी साधारण चेष्टा को लोग न्याय की दृष्टि से देखेंगे और कृतज्ञतापूर्वक उसे स्वीकार करेंगे। वे लोग मेरे लिए कुछ भी कहें, पर मुझे इस बात का सुख है कि मेरे हृदय की बात अनेक विचारशील लोगों तक पहुँची है और वे धीरे-धीरे इस प्रकाश की ओर बढ़ रहे हैं। कम से कम इस सुख से तो मेरे विरोधी मुझे वंचित नहीं कर सकते।"

उनका यह 'वेदांत-भाष्य' बहुत बड़ा ग्रंथ था, जिसे पढ़ने और समझने में अधिक समय और अधिक परिश्रम की आवश्यकता थी। इसलिए उसमें बतलाये गये सिद्धांतों का अधिक लोगों को परिचय देने के विचार से उन्होंने उसका संक्षेप करके 'वेदांत-सार' नामक पुस्तक छपाई। उसी समय उसका अंग्रेजी अनुवाद करके भी छपा दिया। इस पुस्तक का इंगलैंड में भी काफी प्रचार हुआ और एक भारतवासी की ऐसी उच्चकोटि की योग्यता देखकर अंग्रेज लोग भी चमत्कृत हो गये। इस पुस्तक में परमात्मा के निराकार स्वरूप का प्रतिपादन करते हुए राममोहन राय ने लिखा था—

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

"परमात्मा बिना आकार और बिना वर्ण वाला है। वह इंद्रियों से नहीं जाना जा सकता। ऐसी दशा में उसकी मूर्ति आदि बनाकर यह कहना कि परमात्मा ऐसी शकल वाला है। एक प्रकार से उसकी हँसी उड़ाना है। 'मुंडक उपनिषद्' में कहते हैं—**"न चक्षुषा गृह्यते नापि वाचा नान्यैर्देवैस्तपसा कर्मणा वा।"** अर्थात्—आँखों से या आँखों के अतिरिक्त वाणी आदि अन्य इंद्रियों से अथवा तप, शुभ कर्म आदि से उस ब्रह्म को नहीं जाना जा सकता।" इसी प्रकार 'बृहदारण्यक' में बतलाया गया है—**"अदृष्टो-दृष्टा अश्रुत श्रोता अस्थूलमनणुः"** अर्थात्—वह परमात्मा किसी को दिखाई नहीं पड़ता, पर वह सबको देखता है, उसे कोई नहीं सुन सकता, पर वह सब कुछ सुनता है। वह स्थूल अथवा सूक्ष्म भी नहीं है।"

राममोहन राय जनता के सम्मुख यह कहते थे कि निराकार ब्रह्म की उपासना करना मेरा बनाया हुआ कोई नया मत नहीं है, वरन् यही वेद और स्मृतियों का बतलाया प्राचीन मत है। समय के प्रभाव से लोग बाद में उसे भूलकर तरह-तरह के 'पंथ' बनाकर उन पर चलने लगे। पुराणों की कथायें सर्वथा सत्य नहीं मानी जा सकतीं, क्योंकि उनमें अनेक बातें असंभव हैं। पुराण तो मनोरंजन के साथ लोगों को सामान्य धर्म की शिक्षा देने के उद्देश्य से बनाये गये हैं। इस प्रकार जिस समय 'पंडित' नामधारियों ने वेद और शास्त्रों को एक अगम्य रहस्य बनाकर जनता को उनके ज्ञान रूपी प्रकाश से वंचित कर रखा था, तब राममोहन राय ने उनको सर्वसाधारण के सामने प्रकट करके, उनसे लाभ उठाने की प्रेरणा दी। उस समय के अधिकांश पंडित स्वयं ही वेदों से अपरिचित थे और लोगों में उन्होंने ऐसी ही भावना फैला रखी थी कि वेदों में भी दुर्गा, काली, शंकर, कृष्ण, राधा आदि की बातें हैं।

जब राममोहन राय वेदों, उपनिषदों और स्मृतियों के कुछ चुने हुए मूल वाक्यों को बंगाली भाषा में अनुवाद सहित प्रकट करना आरंभ किया और यह सिद्ध करने लगे कि वर्तमान समय में 'ब्राह्मण-पंडित' जो धर्म क्रियायें कराते हैं, वे वास्तव में वेद-विरुद्ध हैं, उस समय 'धर्म-जगत्' में एक बड़ा तहलका-कोलाहल मच गया। ब्राह्मण जिन वेदों की भनक भी शूद्रों के कानों में नहीं पड़ने देते थे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उनकी पुस्तकें छपाकर राममोहन राय ने हिंदू, मुसलमान, ईसाई सबके हाथों में दे दी। जिस ॐ का उच्चारण करने पर शूद्रों की जीभ काट डालने का आदेश था, उसे प्रत्येक व्यक्ति को सिखा दिया। यह देखकर 'मंदिरमार्गी' हिंदू काँप उठे। धर्म व्यवसायी लोगों के हाथ में खिलौना बने हुए लोग पुकार उठे—घोर 'कलजुग' आ गया ! पंडित, पुजारी, शास्त्रियों की आँखें क्रोध से लाल हो गईं। वे विवाह-समारोह, श्राद्धों के जमघट, ब्रह्मभोजों के अवसर पर हुलास सूँघते अथवा सुर्ती फाँकते हुए राममोहन राय को गालियाँ देने लगे।

शास्त्रार्थों का महाभारत—

जब विरोधियों ने देखा कि केवल गालियाँ देने से काम नहीं चल सकता और राममोहन राय की शास्त्रीय प्रमाणों से युक्त बातें पढ़कर कितने ही लोग उनके अनुयायी बनते चले जाते हैं, तो कुछ धनीमानी हिंदू और उनके सहारे पलने वाले पंडित पुस्तकें लिखकर उनको नीचे गिराने को तैयार हुए। कलकत्ते के एक भट्टाचार्य जी पंडित ने 'वेदांत चंद्रिका' नाम की पुस्तक छपवाई, जिसमें परमात्मा को 'शरीर वाला' सिद्ध करने की चेष्टा की थी। उनकी पुस्तक में प्रमाण तो बहुत कम थे, पर गालियाँ खूब दी गई थीं। राममोहन राय ने उसका उत्तर देते हुए लिखा—"भट्टाचार्य ने मुझ पर ताने कसे, बुरा-भला कहा और गालियाँ लिखीं, उनका मैं कोई उत्तर नहीं दे सकता। परमार्थ और परमात्मा के संबंध में विचार करते समय गंदी भाषा लिखना मैं अच्छा नहीं समझता। इसके अतिरिक्त गालियाँ देकर लोगों में अपनी जीत दिखाना मेरे उद्देश्य के विरुद्ध है। इसलिए भट्टाचार्य जी यह समझ लें कि उनकी गालियों का उत्तर दे सकने में तो अवश्य कमजोर हूँ। रह गई परमात्मा को 'शरीर वाला' बतलाना, सो मेरी समझ में ऐसी बात कहना वेद-शास्त्रों की हँसी उड़ाना है। कठोपनिषद्, मुंडकोपनिषद्, ईशोपनिषद् के वाक्यों तथा अनेक वेद मंत्रों से ईश्वर का निराकार होना स्पष्ट रूप से प्रकट होता है।"

फिर चैतन्य-संप्रदाय के एक गोस्वामी ने उनके विरुद्ध एक पुस्तक छाप डाली। उसमें कहा गया कि—"जब ब्रह्म की कोई

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

'उपाधि' और बाह्य लक्षण नहीं है तो वेद उसके संबंध में कोई निर्णय कैसे कर सकते हैं ?" राम मोहन राय ने उत्तर दिया—"वास्तव में जितने पदार्थ इंद्रियों से जाने जा सकते हैं, ब्रह्म उनसे भिन्न हैं। पर 'बृहदारण्यक' के अनुसार संसार की उत्पत्ति, स्थिति और नाश को देखकर तथा जड़ शरीर की चैतन्य सत्तायुक्त प्रवृत्तियों के आधार पर 'परब्रह्म' के होने का पता लगता है।"

किसी 'कविताकार' ने भी एक पुस्तक छपा डाली और शास्त्रीय प्रमाणों के बजाय दूसरे ही ढंग से आक्रमण किया। उसने लिखा कि "पिछले दो-तीन वर्षों से जो पानी की बाढ़ आ रही है और कितने ही गाँव उससे नष्ट हो गये हैं, उसका कारण राममोहन राय का पाप ही है। न राममोहन शास्त्र-विरुद्ध प्रचार करते और न ये सब प्राकृतिक उत्पात होते।" राममोहन राय ने उत्तर दिया—"किसी का मंगल या अमंगल केवल अपने ही पाप-पुण्य से होता है। ईश्वर के विषय में तर्क करने या मूर्तिपूजा पर पुस्तकें लिखने से उसका कोई संबंध नहीं।" 'कविताकार' ने यह भी लिखा कि "राममोहन राय अपने को ब्रह्मज्ञानी कहते हैं, पर ब्रह्मज्ञानी तो एकांत में मौन रहा करते हैं।" इसके उत्तर में उन्होंने कहा—"जो हृदय से धर्म को प्यार करता है, वह बाहरी ढकोसला नहीं बढ़ाया करता, वरन् अध्यात्मशास्त्र का अध्ययन-मनन करके दूसरों में भी उसका प्रचार करता है।" एक आक्षेप यह भी किया गया था कि "राममोहन राय पुस्तक छपाकर जो घर-घर बिकवाते हैं, यह पाप है।" राममोहन ने कहा कि मेरा यह कार्य शास्त्रों के अनुकूल ही है—

वेदार्थं यज्ञशास्त्राणि धर्म शास्त्राणि चैव हि।
मूल्येन लेखयित्वायो दद्यादेति स वै दिवं।।

अर्थात्—"जो व्यक्ति वेदार्थ, यज्ञशास्त्र और धर्मशास्त्र मूल्य देकर लिखवाये और लोगों को देवे तो वह स्वर्ग को जाता है।"

सुब्रह्मण्य शास्त्री नामक व्यक्ति ने भी प्रश्न किया कि—"ब्रह्मज्ञान के लिए वर्ण-व्यवस्था की आवश्यकता है या नहीं ?" राममोहन राय ने उत्तर दिया कि—"यदि किसी ने वेद का अध्ययन न किया हो और वर्णाश्रम धर्म के आचारों का पालन न करता हो

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

तब भी वह ब्रह्मविद्या का अधिकारी है और उसे परमपद प्राप्त हो सकता है।"

पंडित काशीनाथ तर्कपंचानन ने 'धर्म संस्थापनाकांक्षी' के नाम से कितने ही प्रश्न किए। उन्होंने पूछा—"सदाचारहीन ब्रह्मज्ञान के अभिमानियों का जनेऊ पहिनना क्या उचित है ?" राममोहन राय ने उत्तर दिया—"इसमें 'सदाचार' शब्द का अर्थ स्पष्ट नहीं है। यदि उन्होंने इसका यह अर्थ माना हो कि अपने-अपने धर्मों के आचार-पालन का नाम सदाचार है, तो हम उन्हीं से पूछते हैं कि वे अपने 'सदाचार' का कितना पालन करते हैं ? और यदि वे अपने शास्त्रोक्त आचार का पैसा भर भी पालन नहीं करते, तो पहले अपना जनेऊ उतारकर दूसरों का जनेऊ पहिनना अनुचित बतावें।"

"धर्म-संस्थापनाकांक्षी" ने यह भी कहा कि **'महाजनो ये न गतः स पंथा'** के अनुसार महाजनों ने जो किया है, उसी का नाम सदाचार है। पर 'महाजन' कौन है, इसका निर्णय कौन करे ? यहाँ तो सब अपने-अपने आचार्यों को बड़ा और दूसरों को छोटा मानते हैं। वैष्णव लोग जिसको 'महाजन' कहते हैं, शैव और शाक्त उसकी निंदा करते हैं। यही हाल सभी संप्रदाय वालों का है।

फिर काशीनाथ तर्कपंचानन ने एक धनी सनातनधर्मी के कहने से 'पाखंड-पीड़न' नामक एक बड़ा ग्रंथ लिखकर प्रकाशित कराया, जिसमें राममोहन राय को 'पाखंडी', 'नगरवासी बगुला' आदि अनेक अपशब्द लिखे गये थे। राममोहन राय ने बड़ी गंभीरतापूर्वक उसका सविस्तार उत्तर दिया, जिसका नाम था 'पथ्य-प्रदान'। इसमें तर्कपंचानन के प्रश्नों का उत्तर देते हुए और भी बहुत-सी महत्त्वपूर्ण समस्याओं पर विचार किया गया। उदाहरणार्थ, उन्होंने प्रश्न किया कि 'महाभारत एक धार्मिक उपन्यास (कथा ग्रंथ) है या नहीं ? चैतन्यदेव विष्णु के अवतार हैं, इसका शास्त्रीय प्रमाण क्या है ? सदाचार क्या है और उसका निर्णय कैसे हो सकता है ?

अन्य उपयोगी रचनायें—

उपर्युक्त शास्त्रार्थ मूलक पुस्तकों के सिवा राममोहन राय ने और भी बहुत-सी उपयोगी पुस्तकें लिखकर प्रकाशित कीं। 'ब्रह्मनिष्ठ

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गृहस्थ के लक्षण' नामक पुस्तक में उन्होंने समझाया कि सच्चे ब्रह्मनिष्ठ को संसार में रहकर कैसा व्यवहार करना चाहिए ? 'गायत्री उपासना का विधान' में उन्होंने लिखा कि "बिना वेद पढ़े हुए गायत्री के ही द्वारा ब्रह्म की उपासना हो सकती है। जो ब्राह्मण गायत्री का नियमित जप करता है, वह अज्ञात रूप से ब्रह्म की ही उपासना करता है।" 'अनुष्ठान' नामक पुस्तक में उन्होंने उपासना का रहस्य समझाया और उपदेश दिया कि जो मनुष्य तुमसे भिन्न प्रकार से उपासना करता हो, उससे कभी द्वेष मत करो। तुम परमेश्वर की उपासना करते हो और दूसरे धर्म वाले भी उसी की उपासना करते हैं, तब तुममें और उनमें खास भेद क्या है ? उपासना की विधि, उपासना में आहार-विहार के नियम, उपासना की दृष्टि से देश, दिशा और काल के कोई नियम हो सकते हैं या नहीं, उपासना का उपदेशक कौन बन सकता है ?—आदि बातों पर उन्होंने प्रमाण सहित अच्छा विवेचन किया है। इसके पश्चात् उन्होंने 'ब्रह्मोपासना' नामक पुस्तक में 'ब्रह्म समाज' में उपासना के नियमों और विधान का विशेष रूप से वर्णन किया।

'प्रार्थनापत्र' नामक पुस्तक में राममोहन राय ने सब मतों के प्रति उदार भ्रातृ-भाव रखने का उपदेश दिया है। उन्होंने सब मतों का स्वयं गहरा अध्ययन किया था। वे अरबी के विद्वान् थे और कुरान को सामने रखकर ही मुसलमानों को एकब्रह्म की उपासना का रहस्य समझाते थे। 'बाइबिल' को उन्होंने केवल अंग्रेजी में ही नहीं, ग्रीक और हिब्रू भाषा में भी ध्यानपूर्वक पढ़ा था और इस कारण वे ईसाई धर्म के तत्त्व को पादरियों की अपेक्षा भी अच्छी तरह प्रकट कर सकते थे। इस प्रकार के विस्तृत अध्ययन से उनके विचार बहुत उदार हो गये थे। इसलिए इस पुस्तक में उन्होंने यही शिक्षा दी है कि सच्चे धार्मिक व्यक्ति को कभी संकुचित विचार मन में नहीं लाना चाहिए। क्षुद्रता को त्यागना चाहिए। संसार के सब मतों और उनके अनुयायियों को अपना भाई समझना चाहिए।

'ब्रह्म-संगीत' में अपने और कुछ मित्रों के बनाये गायनों का संग्रह किया है। एक बार जब 'कलकत्ता गजट' में किसी लेखक ने उन पर यह आक्षेप किया कि वे अपनी 'आत्मीय सभा' में

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मूर्तिपूजकों के समान ही नाच-गाना कराते हैं तो उन्होंने उत्तर दिया था कि "हमारी उपासना में नाच कभी नहीं हुआ, पर संगीत जरूर होता है। महर्षि याज्ञवल्क्य ने उपासना के समय संगीत की आज्ञा दी है। संगीत से मनुष्य के मन में एक दृढ़ भावना पैदा होती है।" उनके संग्रहीत इन संगीतों का उनके सामने ही काफी प्रचार हो गया और यह पुस्तक तीन-चार बार छापी गई। इसके बाद तो यह ब्रह्म-समाज की मुख्य पाठ्य-पुस्तक बन गई और पचासों बार छपवाकर प्रचारित की गई। इसके गायन ऐसे आध्यात्मिक भावना से परिपूर्ण थे कि ब्रह्मसमाजी ही नहीं मूर्तिपूजक भी इसका बड़ा आदर करते थे।

इस प्रकार ब्रह्मज्ञान की चर्चा उठाकर राममोहन राय द्वारा हिंदू-समाज की जाग्रति का एक बड़ा कदम उठाया गया। उत्तर भारत के अन्य प्रांतों की तरह बंगाल में भी बहुत समय से वेद और उपनिषदों की चर्चा बंद हो गई थी। संस्कृत पाठशालाओं में पंडितगण पुराण, स्मृति, न्याय आदि की शिक्षा ही शिष्यों को देते थे। हिंदू मात्र स्वीकार करते थे कि धर्म का मूल वेद ही है, पर वेद के संबंध में उनकी जानकारी नाममात्र को थी। जब लोगों ने राममोहन राय के मुख से 'वेद ब्राह्मण', 'गृह्य सूत्र', 'वेदांत भाष्य' आदि का नाम सुना और उनके मंत्रों के आधार पर ही उनको 'एकेश्वरवाद' (एक ही परमात्मा) का प्रतिपादन करते देखा, तो पुराने ढर्रे के पंडित हक्के-बक्के रह गये। इसके फल से लोगों में फिर से अपने इस प्राचीन साहित्य की चर्चा आरंभ हुई। मैक्समूलर साहब ने समग्र वेदों के प्रकाशन की योजना की और स्वामी दयानंद आदि ने हिंदी प्रांतों में 'वेदों का झंडा' उठाकर प्राचीन भारतीय संस्कृति को पुनर्जीवित करने का कार्य आरंभ किया। इस प्रकार आधुनिक समय में सर्वसाधारण में वैदिक ज्ञान और उपनिषदों की अध्यात्म-विद्या के प्रचार का सर्वप्रथम श्रेय राममोहन राय को ही है।

राममोहन राय ने ब्रह्मज्ञान और विविध कर्मों के समन्वय पर संस्कृत, बंगाली, हिंदी, अंग्रेजी, फारसी, अरबी आदि भाषाओं में जितने ग्रंथ लिखे उनको देखकर लोग उनके परिश्रम पर आश्चर्य करने लगते हैं। उनके छोटे और बड़े सभी ग्रंथों का निरीक्षण करने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

से विदित होता है कि उन्होंने प्रत्येक को बहुसंख्यक ग्रंथों का अध्ययन और मनन करके ही लिखा है। असाधारण बुद्धि और स्मरण शक्ति के साथ ही उनका परिश्रम भी असीम था। वे रात के दो-दो, तीन-तीन बजे तक जागकर पढ़ते और लिखते थे। इस प्रकार उन्होंने हिंदू-समाज के सुधार के लिए कितना परिश्रम किया और बदले में हजारों व्यक्तियों द्वारा अपशब्द और गालियाँ सहन कीं, इस पर विचार करने से उनको 'हिंदू-धर्म-रक्षक' की पदवी देना यथार्थ ही जान पड़ता है।

ईसाई पादरियों से वाद-विवाद—

उस समय ईसाई पादरी भी देश में अपना जाल फैला रहे थे। मुसलमानों की ऐक्य-भावना के कारण उन पर तो ईसाइयों का प्रभाव बहुत कम हो पाता था। पर हिंदुओं की फूट को देखकर उन पर इन्होंने छापा मारना शुरू किया। अंग्रेजी शासन के आरंभिक दिनों में तो सरकार की नीति यह थी कि हिंदू धर्म के विरुद्ध कोई काम न किया जाये। अगर कोई पादरी भारतीय धर्म के खिलाफ कुछ कहता, तो सरकार को बुरा लगता था और वह उनको यहाँ से निकालकर वापस इंगलैंड भेज देती थी। कारण यही था कि ऐसा होने से कदाचित् यहाँ के निवासी नाराज हो जाते और अंग्रेजी राज्य को नापसंद करने लगते। पर जब उनका शासन जम गया और सर्वसाधारण की तरफ से किसी तरह की आशंका नहीं रही, तब उन्होंने पादरियों को अपना प्रचार-कार्य करने की छूट दे दी। वे छोटे-छोटे ट्रैक्ट लिखकर हिंदू देवताओं की निंदा करते थे। शहर और कस्बों के बाजारों में खड़े होकर अपने धर्म की श्रेष्ठता और इस देश के धर्मों की हीनता बताते रहते थे। कुछ लोगों को धन आदि के लोभ में फँसाकर भी ईसाई बना लेते थे।

इन पादरियों का एक बड़ा अड्डा कलकत्ता के पास श्रीरामपुर में था, जहाँ से अपने धर्म का प्रचार करने के लिए 'समाचार चंद्रिका' नाम का अखबार प्रकाशित करते थे। सन् १८२१ के किसी अंक में उन्होंने एक लेख छापा, जिसमें वेद, न्याय, पतंजलि योग दर्शन, मीमांसा, पुराण, पुनर्जन्म आदि का खंडन

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

किया। उस समय राममोहन राय हिंदू-पंडितों के आक्षेपों का उत्तर देने में व्यस्त रहते थे तो भी अपने धर्म पर ईसाइयों का आक्रमण होते देखकर उनका स्वाभिमान जाग्रत् हो गया। उन्होंने लेख का उत्तर लिखकर 'समाचार चंद्रिका' में ही छपने को भेजा। पर जब उसके संपादक ने उसे छापने से इनकार कर दिया, तो राममोहन राय ने फौरन 'ब्राह्मण संवधि'' नाम का अखबार आरंभ कर दिया और ईसाइयों के आक्षेपों का जोरदार उत्तर दिया। उस समय बंगाल में प्रसिद्ध पंडितों और धनी जमींदारों की कमी न थी, पर किसी को यह नहीं सूझा कि जो हमारे संपूर्ण धर्म पर ही हमला कर रहा है और उसे निगल जाने के मनसूबे बाँध रहा है, पहले उसका मुकाबला किया जाये, इसके बजाय वे हिंदू-धर्म की रक्षा के लिए चिंता करने वाले राममोहन राय ही पर अपना जोर दिखा रहे थे।

यह थी उस अवसर पर धर्म के ठेकेदार बनने वालों की मनोवृत्ति, जो आज भी बदली नहीं है। ये 'पंडित' तथा 'जातीय नेता' नामधारी जीव अपने उन भाइयों पर तो जो समाज में समयानुरूप सुधार करके उसे सशक्त और कार्यक्षम बनाना चाहते हैं, आक्रमण करने में बड़े चतुर और साहसी होते हैं। पर बैर-भाव रखने वाले प्रत्यक्ष बाहरी शत्रुओं का सामना करने की कभी चर्चा भी नहीं करते। ऐसे घर के 'जयचंदों' का अस्तित्व किसी भी जाति, धर्म के लिए वास्तव में बड़े अभाग्य का विषय है। ऐसे व्यक्ति अपने पेट-पालन के धंधे और नेतागिरी को कायम रखने के लिए समाज को भेड़चाल पर ही कायम रखने का उद्योग करते रहते हैं। चाहे उसके सामने किसी कुएँ में गिरकर नष्ट हो जाने का खतरा ही क्यों न हो। जो लोग अपने भाइयों को इस खतरे की सूचना देकर सुरक्षित मार्ग पर चलने की सलाह देते हैं, वे ही उनको 'दुश्मन' जान पड़ते हैं, क्योंकि उनको भय लगता है कि कहीं ये हमारी 'नेतागिरी' और 'पेट के धंधे' को छीन न लें। इस प्रकार ये स्वार्थ-प्रधान और अदूरदर्शी लोग 'रेवड़ी के लिए मसजिद ढहाने' की कहावत को चरितार्थ करते हैं। राममोहन राय सचमुच हम सब के श्रद्धा के पात्र हैं, जिन्होंने ईसाई-आक्रमणकारियों का अकेले होने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पर भी सामना किया और उनके इरादों को बहुत कुछ असफल कर दिया।

पर राममोहन राय उस दशा में भी सच्चे ब्राह्मणों के विरुद्ध नहीं थे। पादरियों ने अपने लेख में ब्राह्मणों की भी निंदा की थी और हँसी उड़ाई थी। उसका उत्तर देते हुए राममोहन राय ने लिखा था—ब्राह्मण की पर्णकुटी, शाक का भोजन और भिक्षावृत्ति को देखकर उन्हें तुच्छ मत समझो, क्योंकि धर्म ऐश्वर्य के शिखर पर नहीं बैठता, ऊँची पदवियों के पीछे मारा-मारा नहीं फिरता और बड़ी-बड़ी हवेलियों में निवास नहीं करता।" पादरियों ने न्याय, मीमांसा, सांख्य आदि हिंदू-दर्शनों पर जो आक्षेप किए थे, उनका उत्तर राममोहन राय ने बड़ी योग्यतापूर्वक दिया। पुराण और तंत्रों के संबंध में प्रश्न किया गया था कि क्या उनमें असंभव गप्पबाजी और साकार उपासना नहीं है ? राममोहन राय ने इसके उत्तर में 'बाइबिल' के ही बीसियों प्रमाण देकर बतलाया कि ऐसी बातों की ईसाइयों में कमी नहीं है, फिर वे हिंदुओं के पुराणों पर किस मुँह से आक्षेप करते हैं ?

ईसाइयों ने प्रश्न किया कि "हिंदू-शास्त्रों के अनुसार जीवों को अपने कर्मों के अनुसार स्थावर और जंगम योनियों में आना पड़ता है। पर हिंदुओं का ही एक संप्रदाय मृत्यु के पश्चात् कुछ नहीं मानता। इनमें से कौन-सी बात ठीक मानी जाये ? राममोहन राय ने उत्तर दिया—"किसी हिंदू शास्त्र में नहीं लिखा कि मृत्यु के पश्चात् कुछ नहीं होता। यह केवल नास्तिकों का मत है। शास्त्र तो कहता है कि इसी संसार में पुण्य-पाप का फल मिलता है या ईश्वर पाप और पुण्य के अनुसार मृत्यु के पश्चात् स्वर्ग और नरक देता है। यही बात ईसाई धर्म में भी मानी गई है कि खुल्लमखुल्ला दान करने से इसी जन्म में फल मिलेगा। बाइबिल में यह भी बतलाया है कि इस शरीर के नाश होने पर ईश्वर कयामत के दिन जीव को फिर शरीर देगा और इस शरीरयुक्त जीव से पुण्य और पाप का फल भुगतेगा। यदि ईसाई लोग ऐसी सृष्टि नियम के विरुद्ध बात को मान सकते हैं, तो सृष्टि नियम के अनुकूल इसी जगत् में दुबारा शरीर मिलने (पुनर्जन्म) पर वे क्यों आश्चर्य करते हैं ?"

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इस प्रकार ईसाइयों के साथ राममोहन राय ने बहुत समय तक लेख और पुस्तकें लिखकर शास्त्रार्थ किया और उनको निरुत्तर कर दिया। राममोहन राय ने मूल हिब्रू बाइबिल के प्रमाण देकर ईसाई धर्म में प्रचलित कितने ही विश्वासों का खंडन कर दिया। पादरी उनका कुछ उत्तर न दे सके तो वे भी राममोहन राय को अपशब्द कहने लगे, जो उनकी हार की निशानी थी, क्योंकि शास्त्रार्थ में गाली वही बकता है, जिसके पास उत्तर देने के लिए उचित तर्क और प्रमाण नहीं होते। राममोहन राय तो सदैव शांत और गंभीर रहते थे, क्योंकि अपने अध्ययन और परिश्रम के बल पर वे प्रमाणों के ढेर लगा देते थे। उन्होंने ईसाइयों के इस प्रकार गाली बकने पर लिखा—"सभ्यता ने मुझे ऐसी बातों का उत्तर देने से रोका है, पर मेरे विपक्षियों को स्मरण रखना चाहिए कि वे शुद्ध कर्म पर वाद-विवाद कर रहे हैं, दुर्वाक्य लिखने से उनका कोई लाभ नहीं हो सकता।"

वास्तव में राममोहन राय ईसाई धर्म के भी विरोधी नहीं थे। ईसाई पादरियों से वाद-विवाद करने के लिए उन्होंने जो उनके धार्मिक ग्रंथों का गहरा अध्ययन किया, उससे उनको उस धर्म के विषय में बहुत अधिक ज्ञान हो गया और कुछ समय पश्चात् उन्होंने "प्रीसेप्ट्स ऑफ जीसस टू पीस एंड हैपीनेस" (ईसा मसीह के सुख और शांतिदायक उपदेश) नामक पुस्तक लिखी। भारत में रहने वाले पादरियों ने तो वाद-विवाद की मनोवृत्ति के कारण इसका भी विरोध किया, पर इंगलैंड एवं अमेरिका में इसका बड़ा आदर किया गया और इंगलैंड में इसे कई बार छापकर प्रचारित किया गया। योरोप की अन्य अनेक भाषाओं में भी इसका अनुवाद किया गया। एक भारतवासी की ऐसी अगाध विद्या, बुद्धि और योग्यता देखकर योरोप वाले आश्चर्य करने लगे। इसका यह परिणाम हुआ कि जब सन् १८३० में राममोहन राय विलायत गये तो वहाँ की जनता और बड़े-बड़े धार्मिक नेताओं ने उनका बहुत स्वागत किया और अपने गिर्जाघरों में बुलाकर बड़े आदर के साथ उनकी अभ्यर्थना की।

इंगलैंड की धार्मिक जनता पर उनका कितना अधिक प्रभाव पड़ा था, इसका वर्णन करते हुए उनके जीवन चरित्र की विदुषी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

लेखिका मिस मेरी कारपेंटर ने लिखा था—"राजा राममोहन राय के इंगलैंड पहुँचने के पहले ही उनका यश वहाँ के घर-घर में पहुँच चुका था। राममोहन राय के पहुँचने के पहले ही वहाँ के कितने ही ईसाइयों ने उनकी विद्या-बुद्धि के विषय में कई ट्रैक्ट छपाकर बाँटे थे। इंगलैंड वाले समझने लगे थे कि अब पूर्व से एक महात्मा का उदय होने वाला है। सारा इंगलैंड भारत माता के सपूत का स्वागत करने को तैयार था।" "भारत और मिसर का भ्रमण" पुस्तक के लेखक—लेफ्टिनेंट कर्नल फीट् सक्लारेंस ने लिखा था—"वे (राममोहन राय) संस्कृत के ही पंडित नहीं बल्कि अंग्रेजी के भी बड़े विद्वान् है। अंग्रेजी हमारी मातृभाषा है, पर वे ऐसी ही धारा प्रवाह अंग्रेजी बोलते थे जैसा एक अंग्रेज वक्ता बोलता है। उन्होंने स्पष्ट रूप से सिद्ध कर दिया है कि हिंदू धर्म शुद्ध एकेश्वरवादी है।"

उन्होंने धार्मिक विषयों पर जो कुछ लिखा था, वह इतना विद्वतापूर्ण था कि फ्रांस के लोगों ने उनको बुलाकर उनका स्वागत समारोह किया। फ्रांस के सम्राट् लुई फिलिप ने उनको बुलाकर सम्मान किया, उनके साथ एक टेबिल पर बैठकर भोजन किया। पेरिस की एशियाटिक सोसायटी ने उनको अपना 'सम्मानित सदस्य' (आनरेरी मेंबर) बनाया। महाकवि टॉमस मूर ने एक प्रसिद्ध होटल में उनको दावत दी। उन्होंने अपनी डायरी में राजा राममोहन राय की बड़ी प्रशंसा लिखी है। यह है उनकी विद्वता और महानता का प्रमाण कि फ्रांस जैसे दूरवर्ती देश में, जहाँ की भाषा भी वे नहीं जानते थे और जहाँ केवल दो-चार मास के लिए भ्रमण करने को गये थे, उनका इतना आदर किया गया और उनके कारण भारतवर्ष और भारतीय धर्म का भी महत्त्व स्वीकार किया गया, पर यहाँ अपने देश में 'शास्त्री जी' और भट्टाचार्य जी' की दृष्टि में वे 'नास्तिक, पतित और जाति बहिष्कृत' ही बने रहे ! अब पाठक स्वयं ही विचार करें कि इन दोनों में से किसको हिंदू-धर्म का भक्त, सेवक और रक्षक माना जाये ?

विलायत और फ्रांस में इस प्रकार ईसाइयों द्वारा सम्मानित किए जाने और गिर्जाघरों में जाकर प्रार्थना करने का आशय यह नहीं था कि उन्होंने अपनी जाति और धर्म को त्याग दिया था।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

विलायत में रहकर भी वे अपनी 'ब्रह्म उपासना' उसी प्रकार करते थे और वहीं पर देहांत हो जाने पर जब उनके शव से वस्त्र उतारे गये तो शरीर पर यज्ञोपवीत मौजूद था। मरने से पहले वे यह भी कह गये थे कि उनको ईसाइयों के कब्रिस्तान में न दफनाया जाये वरन् हिंदुओं की विधि से अलग स्थान में समाधि दी जाये।

सती प्रथा का उन्मूलन—

राममोहन राय सती किए जाने की क्रूरता से बाल्यावस्था से ही परिचित थे, जब उनके बड़े भाई की विधवा को उनकी आँखों के सामने बलपूर्वक सती किया गया था। अंग्रेज शासक इस प्रथा को बहुत बुरा मानते थे, पर उनको यह डर लगता था कि इसमें हस्तक्षेप करने से शायद इस देश में अशांति फैल जायेगी और हमारे नव स्थापित राज्य के लिए एक बड़ा खतरा पैदा हो जायेगा। इसलिए उन्होंने पंडितों से सम्मति लेकर आरंभ में यह आज्ञा प्रचारित की कि 'सती होने वाली स्त्री से यह मालूम कर लिया जाये कि वह अपनी राजी-खुशी से और होश-हवास में सती होती है या किसी प्रकार की जबर्दस्ती के कारण ?" क्योंकि पंडितों के मतानुसार शास्त्रों में किसी स्त्री को बलपूर्वक सती करने का विधान न था और उसे निंदनीय बतलाया गया था। पर उस समय, कम से कम बंगाल में तो १०० में से ६० सतियाँ बहकाकर ही की जाती थीं और एक बार चिता पर बैठा दिये जाने के बाद उसे भाले और तलवारों से वहीं पर बैठे रहने को विवश किया जाता था।

इसीलिए जब राममोहन राय ने सती प्रथा के विरुद्ध आंदोलन आरंभ किया तो एक तरफ तो सरकार एक प्रभावशाली विद्वान् को अपना सहायक और समर्थक पाकर प्रसन्न हुई, पर दूसरी ओर हिंदू-जाति का अंधविश्वासी समुदाय उन पर टूट पड़ा, उनको धर्मद्रोही और जातिद्रोही कहा जाने लगा। बड़ी-बड़ी सभायें करके प्रस्ताव पास किये जाने लगे कि राममोहन राय के कहने से सरकार सती-प्रथा को बंद न करे। पर परोपकार के लिए जीवन अर्पण करने का संकल्प करने वाले इन बाधाओं के कारण कब पीछे पैर हटा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सकते थे ? उन्होंने अंग्रेजी लेखों द्वारा अंग्रेज-समाज पर इतना प्रभाव डाला कि अंत में वे उन्हीं के पक्ष में हो गये।

सती प्रथा को अनुचित सिद्ध करने के लिए राममोहन राय ने मुख्यतः तीन दलीलें पेश कीं—(१) शास्त्रों में सती होना आवश्यक नहीं माना गया है। कहीं भी यह नहीं लिखा है कि यदि कोई सती न हो तो उसे पाप लगेगा। (२) काम्य-कर्म को शास्त्रों में हीन कहा गया है और सती होना एक काम्य-कर्म ही है। फिर शास्त्रों में ही सती होने की अपेक्षा विधवा का ब्रह्मचर्य-व्रत पालन करना अधिक श्रेष्ठ बतलाया है। (३) शास्त्रों में सती के सब काम उसकी इच्छानुसार होने चाहिए। वह अपने आप संकल्प करे, अपने आप चिता पर बैठे और शांति से जलकर मर जाये, पर ऐसा कहीं नहीं होता। सती के नाम पर सर्वत्र नारी-हत्या की जाती है, इसलिए यह प्रथा बंद की जानी चाहिए।

राममोहन राय ने सती प्रथा पर बंगाली और अंग्रेजी में तीन पुस्तकें लिखकर मुफ्त बँटवाई। अंग्रेजी पुस्तकों को उन्होंने उस समय के वायसराय लार्ड हेस्टिंग्स की पत्नी श्रीमती मार्क्विस ऑव हेस्टिंग्स को समर्पित किया था। इसका अंग्रेजी अधिकारियों पर बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा। सन् १८१६ के 'इंडिया गजट' में लिखा गया था—"इस देश के एक अति प्रधान विश्व-हितैषी ने सतीदाह की कठोर प्रथा का आंदोलन उठाकर शासकों की विशेष सहायता की है। बड़े उत्साह से उसने अपनी सम्मति वायसराय के सामने रखी है। थोड़े दिन पहले वायसराय उनसे मिले थे और बड़े आदर के साथ उनकी बातें सुनी थी। हमें मालूम हुआ कि गवर्नर-जनरल इस प्रथा को बंद कर देंगे, क्योंकि ब्रिटिश शासन के लिए इससे बढ़कर और कोई कलंक नहीं हो सकता।" फिर भी इस समस्या पर सब पहलुओं से विचार करने और विरोधियों की बातों का निराकरण करने में कुछ वर्ष लग ही गये। बीच में लार्ड आमहर्स्ट गवर्नर जनरल बनकर आ गये, जो इस खतरे को उठाना नहीं चाहते थे और इसलिए मौन ही बने रहे। सन् १८२८ में लार्ड विलियम बैंटिक आये जो बड़े सुधारप्रिय थे। उन्होंने राजा राममोहन राय को बुलाकर उनसे सलाह की और सन् १८२९ की ४ दिसंबर को कानून

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बनाकर सदा के लिए सती-प्रथा को बंद कर दिया। दो-तीन दिन के भीतर ही इस कानून का हुक्म मजिस्ट्रेटों के पास भेज दिया गया और अनगिनत विधवाओं की तकदीर फिर गई।

इधर अंध-विश्वासियों की 'धर्म-सभा' भूखी बिल्ली की तरह उछल-कूद मचाने लगी। राममोहन राय के ऊपर चारों तरफ से अपशब्दों और शापों की वर्षा होने लगी। एक बड़ी सभा करके उन्हें पूरी तरह जाति-बाहर किया गया। कलकत्ते के कितने ही प्रभावशाली व्यक्ति कहने लगे कि 'उन्हें जान से मार दो।' उनके पास इस प्रकार की धमकी के कई पत्र आये भी। सचमुच वह समय राममोहन राय और उनके साथियों के लिए बड़े संकट का था। उनके सब मित्र और हितैषी उनको समझाते थे कि अकेले बाहर मत निकला करो, एक विश्वासी आदमी जरूर साथ रखो। पर उनको अपने आत्मबल और शरीरबल पर भरोसा था, इससे निडर होकर सर्वत्र आते-जाते थे। हाँ, उन दिनों आत्म-रक्षा के भाव से अपने जेब में एक कटार अवश्य रख लेते थे।

लार्ड बैंटिक ने सती-प्रथा बंद की थी, इसलिए उनके प्रति कृतज्ञता प्रकट करने के लिए राममोहन राय ने एक अभिनंदन पत्र दिया। इसके लिए कलकत्ता के टाउन हाल में १६ जनवरी, १८३० को एक सभा की गई, जिसमें तीन-सौ के लगभग गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। 'धर्म-सभा' भी चुप नहीं बैठी थी। उसने सतीदाह के कानून को रद्द करने के लिए इंगलैंड की सरकार के पास अर्जी भेजी, पर वहाँ सब लोग वास्तविक स्थिति को समझ चुके थे, इससे कोई परिणाम न निकला।

सती-प्रथा को बंद कराके उन्होंने अपना ध्यान बहु-विवाह की तरफ दिया। यह भी एक ऐसी निंदनीय प्रथा थी, जिसके कारण बंगाल में लाखों स्त्रियों का भाग्य जान-बूझकर पत्थर से फोड़ दिया जाता था। उस समय बंगाल में ऐसा कुलीन ब्राह्मण कदाचित् ही कोई मिल सकता था जिसने एक ही स्त्री से विवाह किया हो। बल्कि सुनने में तो यहाँ तक आता था कि ऐसे भी व्यक्ति मौजूद हैं, जो १०८ स्त्रियों से विवाह कर चुके हैं। दस-दस और पाँच-पाँच विवाह करना तो मामूली-सी बात थी। कारण वही था कि जो लोग

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गरीबी के कारण अपनी लड़की का अच्छा विवाह नहीं कर सकते थे अथवा जिनको 'कुलीन' वर की सनक होती थी, वे पुण्य की निगाह से अपनी पुत्रियों का विवाह ऐसे लोगों से कर देते थे, जिसका पेशा ही विवाह करना होता था। उस समय बंगाल में ऐसी लाखों स्त्रियाँ थीं, जिनका केवल विवाह संस्कार ही पति के साथ हुआ था। पर जिन्होंने कभी पतिगृह के दर्शन भी नहीं किए थे। वे बाप के घर में रहकर ही बूढ़ी हो जाती थीं।

इस प्रकार के अनेक बहु-पत्नी वाले तो कोई धंधा-रोजगार भी नहीं करते थे। वे महीने-महीने, पंद्रह-पंद्रह दिन एक-एक स्त्री के घर रहकर अपनी उमर बिता देते थे। राममोहन राय ने इस संबंध में बहुत से लेख और पुस्तिकायें लिखकर खूब प्रचार किया, जिससे इसकी बुराइयाँ लोगों की समझ में आने लगीं और धीरे-धीरे इस प्रथा में बहुत कमी हो गई। उन्होंने जाति भेद की निःसारता तथा उसकी हानियों के संबंध में भी बहुत कुछ लिखा और संस्कृत के 'वज्र-सूची' नामक ग्रंथ का बंगला अनुवाद करके प्रकाशित किया, जिससे वर्तमान जाति-भेद का खंडन होता था।

ब्रह्म-समाज की स्थापना—

अपने इस समाज-सुधार संबंधी सिद्धांतों का प्रचार करने के उद्देश्य से राममोहन राय ने कलकत्ता में अपने कुछ मित्रों और सहयोगियों को लेकर सन् १८१५ में ही 'आत्मीय सभा' के नाम से एक संस्था स्थापित की थी। इसमें प्रति सप्ताह वेद-पाठ होता था और ब्रह्म-संगीत गाये जाते थे। कुछ लोग ऐसे ही परीक्षा लेने के विचार से इसमें आते थे, पर अपने संकीर्ण विचारों के कारण फिर छोड़ देते थे। एक जय कृष्णसिंह नामक व्यक्ति ने इसको छोड़ कर यह अफवाह फैलाई कि 'आत्मीय-सभा' में सब मिलकर बैल को काटते हैं ? इस प्रकार के विरोध के कारण अनेक लोग इनको छोड़कर चले गये तो भी वह अपने विचारों पर दो-चार मित्रों के साथ प्रतिदिन 'परमात्मा की प्रार्थना' कर ही लेते थे। विरोधियों ने राममोहन राय पर कुछ लोगों को भड़काकर झूठे-सच्चे मुकदमे भी चलवा दिये, पर तब भी वे निराश नहीं हुए। सन् १८१६ में सभा का

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

एक बड़ा अधिवेशन हुआ। उसमें पुराणपंथियों के नेता राजा राधाकांत देव अनेक शास्त्रियों को लेकर आये और राममोहन राय के सिद्धांतों को गलत साबित करने की बहुत चेष्टा की, पर विजय राममोहन राय की ही हुई।

इस प्रकार आठ-दस वर्ष चलने के पश्चात् ऐसा समय आया जब राममोहन राय और उनके सहयोगी श्री द्वारकानाथ ठाकुर, कालीनाथ मुंशी, प्रसन्नकुमार ठाकुर आदि ने निश्चय किया कि इस संस्था को स्थायी रूप प्रदान किया जाये। तब उन्होंने १८२८ में एक मकान किराये पर लेकर इसको 'ब्रह्म-समाज' के नाम से स्थापित किया और उसके उद्देश्य इस प्रकार निश्चित किए—

(१) वेद और उपनिषदों को मानना चाहिए।

(२) इनमें एक ईश्वर का प्रतिपादन किया गया है।

(३) मूर्तिपूजा वेदानुकूल नहीं है इसलिए इसे त्याज्य समझा जाये।

(४) बहु-विवाह, बाल-विवाह, सती प्रथा सब वेद विरुद्ध और त्याज्य हैं।

(५) ईसाई-धर्म में भी बहुत से अच्छे लोग हैं, परंतु ईसाई-धर्म किसी तरह हिंदू-धर्म से श्रेष्ठ नहीं हो सकता। यह आवश्यक नहीं कि शासकों के धार्मिक विचार भी उच्च और सत्य हों। यह उनकी बड़ी भूल है कि वे पराजित जाति पर अपने धर्म को आरोपित करें।

इस समाज का प्रचार बढ़ने लगा और सन् १८१९ में ही इसके निजी भवन की नींव रख दी गई और उसी वर्ष सभा का कार्य उसमें होने लग गया। राममोहन राय ने इसकी नियमावली और उपासना-पद्धति ऐसे बनाने की चेष्टा की थी, जिससे उसके सदस्यों में मतभेद का अवसर न आवे। उन्होंने कहा कि किसी संप्रदाय में तीन बातों पर ही मतभेद हुआ करते हैं—(१) उपास्य देवता के विषय में, (२) उपासक कौन हो सकता है ? (३) उपासना-प्रणाली।

(१) पहली बात के संबंध में राममोहन राय का मत था कि ब्रह्मांड का उत्पन्नकर्त्ता, रक्षणकर्त्ता और संहारकर्त्ता अनादि, अगम्य, अपरिवर्तनशील, सर्वव्यापी परमात्मा ही उपासना के योग्य है। किसी प्रकार के सांप्रदायिक नाम से उसकी उपासना करनी ठीक नहीं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

(२) उपासक कौन हो सकता है ? जो हार्दिक श्रद्धा से प्रेरित होकर परमात्मा की उपासना करने आवे, उसके लिए ब्रह्म-समाज का दरवाजा सदा खुला है। वह किसी जाति, किसी संप्रदाय, किसी धर्म, किसी समाज और किसी देश का हो, इसका कुछ विचार न किया जायेगा। समाज-भवन में उपासना करने का सबको पूर्ण अधिकार है।

(३) उपासना प्रणाली क्या होगी ? कोई चित्र, मूर्ति या आकार वाली मूर्ति कदापि काम में न लाई जायेगी। भोग, प्रसाद, बलिदान, मानता आदि कोई सांप्रदायिक बात न होगी। किसी प्रकार का खान-पान, भंडारा आदि न होगा। किसी मनुष्य या समाज की यहाँ हँसी, निंदा, चित्त दुःखाने वाली बात न होगी, जिससे सृष्टिकर्त्ता परमात्मा का ध्यान, धारणा बढ़े और प्रेम, नीति, दया, भक्ति, साधुता की उन्नति हो, ऐसे ही उपदेश और संगीत यहाँ पर होंगे और किसी प्रकार के नहीं।

राममोहन राय ने कोई नया धर्म नहीं चलाया—

इस प्रकार राममोहन राय ने कोई नया धर्म नहीं चलाया, वरन् प्राचीन भारतीय मान्यता को ही फिर से आजकल की भाषा और शैली में प्रकाशित किया। निराकार ईश्वर की उपासना क्या नई बात है ? हजारों ऋषि-महर्षि निराकार की उपासना ही करते रहते हैं। सब उपनिषदों में निराकार परमात्मा की ही उपासना भरी हुई है। सब जाति, वर्ग और संप्रदाय वाले एक ही प्रकार से निराकार ईश्वर की उपासना करें। यह प्रचलित प्रथा के विरुद्ध जान पड़ता था। पर इसमें भी नया कुछ नहीं था क्योंकि आरंभ में जाति, वर्ण, संप्रदाय थे ही नहीं, तब उपासना के विषय में किसी को कैसे पृथक् किया जा सकता था ? इसी के आधार पर राममोहन राय ने कहा—"ब्राह्मण और चांडाल, हिंदू और मुसलमान सब आओ और भाई-भाई बनकर एक निराकार ईश्वर की उपासना करो। सब भेदभाव भूलकर, सार्वभौमिक भाव से एकमात्र निराकार, अगम्य, अनादि परंब्रह्म की पूजा करो।" पर द्वेष बुद्धि वालों को इसमें भी अधर्म और पाप ही जान पड़ा और वे उनको क्रिस्तान, म्लेच्छ आदि बतलाने लगे। यद्यपि श्रीमद्भगवद्गीता में भगवान् कृष्ण ने भी यही बात कुछ इस प्रकार कही है—

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

विद्या विनय सम्पन्ने ब्राह्मणे गवि हस्तिनि।
शुनि चैव श्वपाके च पंडिताः समदर्शिनः।।

(अध्याय ५-१८)

अर्थात् "पंडित लोग विद्या-विनययुक्त ब्राह्मण तथा चांडाल में, हाथी, गौ और कुत्ते में समभाव रखने वाले होते हैं।"

पर एक आजकल के पंडित हैं, जिन्होंने 'टका-धर्म' को अपना रखा है और समभाव तथा विश्वबंधुत्व की बातों को अर्थवाद (प्रशंसात्मक) कह कर टाल देते हैं। ऐसे ही 'पंडितगण' राममोहन राय से लेकर गांधी जी तक को 'नास्तिक और पापी' बतलाते आए हैं और अंधविश्वास के गर्त में पड़ी हुई अशिक्षित जनता को बहकाते रहते हैं। राममोहन राय के प्रयत्नों को नष्ट करने के लिए उन्होंने भी 'धर्म-सभा' कायम कर दी थी। इस सभा का यही काम था कि हर तरह से ब्रह्म-समाज की बुराई करें। राममोहन राय ने अपने विचारों का प्रचार करने के लिए 'संवाद कौमुदी' नामक पत्र निकाला, तो 'धर्म सभा' वालों ने भी 'चंद्रिका' नाम का समाचार-पत्र प्रकाशित करना आरंभ कर दिया। शहर के बड़े-बड़े जमींदार और धनी लोग उत्साहपूर्वक उसमें भाग लेने लगे और एक लाख का 'फंड' उसके संचालन के लिए इकट्ठा किया गया। चितपुर रोड के एक बड़े मकान में सभा का अधिवेशन होता था। कहते हैं कि उस समय तमाम रास्ता इन लोगों की गाड़ियों से रुक जाता था।

एक तरफ ऐसे 'धर्म-मूरत' धनी, जमींदार और पूजा-पाठ से पेट भरने वाले पंडित लोग थे और दूसरी तरफ एक निराकार ब्रह्म की उपासना को ही सत्य समझने वाले राममोहन राय और उनके थोड़े-से उत्साही सदस्य थे। एक लेखक के कथनानुसार "जो राममोहन राय की संस्था में सम्मिलित हुए थे, वे भी सर्व साधारण में बड़ी निंदा की दृष्टि से देखे जाते थे और उन पर उँगलियाँ उठती थीं। रास्ते में निकलते हुए लोग उन्हें सुना-सुनाकर 'नास्तिक' पाखंडी, धूर्त' आदि उपाधियों से विभूषित करते रहते थे। एकमात्र परमात्मा पर विश्वास रखकर और अपने नेता के प्रोत्साहन से वे सब अत्याचार शांति से सह लेते थे। न उन लोगों के पास जन-बल था, न

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

धन-बल और न कोई ऊपरी आडंबर, पर धर्म-सभा का आडंबर बड़ा भारी था। उसकी सजावट और तड़क-भड़क से साधारण बुद्धि वाले यही समझते थे कि 'ब्रह्म-समाज' अब छूमंतर की तरह उड़ जायेगी। किसे आशा थी कि यह छोटा-सा वट का बीज एक दिन विशाल वृक्ष बन जायेगा ?

"धर्म-सभा वालों ने अपना यही कर्तव्य बना लिया था कि जहाँ बैठना 'ब्रह्म-समाज' की निंदा अवश्य करना। वे लोगों को ब्रह्म-समाज में जाने से रोकते थे और जो रोकने पर भी चले जाते थे, उन्हें 'जाति बाहर' होने का दंड दिया जाता था। इसका परिणाम यह हुआ कि घर-घर में कलह होने लगा तथा बाप-बेटे में और भाई-भाई में वैमनस्य उत्पन्न हो गया। जो ब्राह्मण किसी ब्रह्म समाजी के घर से दान ले आता था, उसे धर्म-सभा में नहीं बुलाया जाता और यह भी प्रचार किया जाता कि इसे कोई दान न दे।"

महामानव का महान् आत्म त्याग—

फिर भी राममोहन राय ने इन विघ्नों की परवाह नहीं की। विरोध जितना अधिक बढ़ा उतने ही जोर से वे भी अपना प्रचार कार्य करने लगे। यद्यपि ब्रह्म-समाज का भवन बनकर उसमें संस्था का कार्य नियमित रूप से आरंभ होने के साल भर पीछे ही उनको इंगलैंड जाना पड़ा और वहीं पर तीन वर्ष के भीतर उनका देहांत हो गया तो भी उन्होंने जो पौधा इतने त्याग और तपस्या से लगाया था, वह दिन पर दिन वृद्धि को ही प्राप्त होता गया। आगे चलकर यद्यपि उसमें भी वृक्ष की अनेक शाखाओं के समान 'आदि ब्रह्म समाज' और 'नूतन ब्रह्म समाज' आदि के नाम से विभाजन हो गया तो भी उन्होंने समाज-सुधार का जो कार्यक्रम उठाया था, वह देश के एक बड़े भाग में फैल गया और उससे लाखों लोगों को समय के विपरीत प्राचीन रूढ़ियों को त्यागने और समय के अनुकूल नियमों को अपनाने का साहस मिला। राममोहन राय की प्रेरणा से आगे चलकर अन्य प्रांतों में ऐसी ही विभिन्न समाज-सुधारक संस्थाओं का जन्म हुआ। बंबई में तो 'ब्रह्म-समाज' का ही संपूर्ण कार्यक्रम 'प्रार्थना-समाज' के नाम से अपना लिया गया।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

राममोहन राय ने लोगों को यही शिक्षा दी थी कि रीति-रिवाज और सामाजिक प्रथाएँ समाज के संचालन और सुव्यवस्था के लिए बनाई जाती हैं। उनको समाज से ऊपर समझ लेना, अपरिवर्तनीय धर्म की तरह मान लेना भूल है। जब समय और परिस्थितियाँ बदल जायें तो पुराने रीति-रिवाजों की जगह समय के अनुकूल नये नियम बना लेने चाहिए। यह सिद्धांत बिल्कुल सरल और बुद्धिगम्य है, पर अंधविश्वासी व्यक्ति इसको भूल जाते हैं और जो कोई इस तथ्य को समझना चाहता है, उसे वे 'धर्म-विरोधी' 'नास्तिक' 'पापी' आदि कहने लगते हैं।

राजा राममोहन राय सचमुच एक महामानव थे। अगर वे चाहते तो खूब धन, संपत्ति, सम्मान पाकर बड़े लोगों की तरह सुख का जीवन बिता सकते थे। पर उन्होंने अपनी शक्तियों को निजी सुख प्राप्त करने के बजाय हिंदू-समाज को अज्ञानांधकार और पतन के मार्ग से हटाकर कल्याणकारी मार्ग दिखलाने में लगा दिया। फल यह हुआ कि वे स्वयं तो धन-दौलत और सांसारिक वैभव से वंचित रह गये, पर उनके प्रयत्नों से लाखों व्यक्तियों के सामाजिक और मानसिक बंधन कट गये और वे नारकीय परिस्थितियों से बाहर निकलकर सुखी जीवन बिता सके। लाखों निर्दोष नारियों की प्राण-रक्षा भी उनके प्रयत्नों से हो सकी।

विलायत-यात्रा और अंतिम समय—

राममोहन राय सदैव कर्म में लगे रहने वाले पुरुष थे। उनकी आकांक्षा थी कि जो सुधार उन्होंने किए हैं, उनका परिचय इंगलैंड जाकर वहाँ के निवासियों को भी दिया जाये। भारत-शासन की बागडोर इंगलैंड के नेताओं और शासकों के ही हाथ में थी, इसलिए उनको अपना मंतव्य समझाकर इन नये सुधारों को सुदृढ़ बना देना भी उनके मन में था। पर वे इसलिए रुके हुए थे कि जो काम वे यहाँ शुरू कर चुके हैं, वह कहीं अधूरा ही न रह जाय। जब उन्हें भरोसा हो गया कि जो काम मैंने आरंभ किया है, वह मेरे पीछे भी चलता रहेगा, तब उन्होंने यात्रा का विचार पक्का कर लिया।

जब उनके विलायत जाने का समाचार सब जगह फैला, तो फिर एक हलचल मच गई। एक ऊँचे कुल में पैदा हुआ ब्राह्मण

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

'गोमांस भक्षियों' के देश में जा रहा है, इस बात से पुराने ढर्रे के लोगों को बड़ी चिंता होने लगी। जो लोग अभी तक धार्मिक विषयों में केवल उनका विरोध ही करते रहते थे और उनको 'पापी' कहते-कहते नहीं अघाते थे, वे भी ऐसा 'नीच काम' न करने की सलाह देने लगे। वे फिर जाति का डर दिखाने लगे और लड़कों, बच्चों को भी पैतृक संपत्ति का हिस्सा न मिलने की बात कहने लगे। पर जो राममोहन राय अब तक इन अंधविश्वासों के सैकड़ों अत्याचारों को वीरतापूर्वक सहन कर चुके थे, वे ऐसे झूठे भय से कब डरने वाले थे ?

पर असली प्रश्न धन का था। विलायत-यात्रा के लिए काफी धन की आवश्यकता थी, जिसका उनके पास अभाव था। संयोग से उसी समय दिल्ली के 'पेंशनयाफ्ता बादशाह' को अपने एक मुकदमे की पैरवी इंगलैंड में करानी थी और उसने राममोहन राय की विद्या, बुद्धि और प्रभाव की बात सुनकर उनको इस काम के लिए चुना। उसने उनको अपने दरबार में नियुक्त करके तथा 'राजा' की पदवी देकर उपयुक्त सत्ता के साथ विलायत भेजने की व्यवस्था की।

इंगलैंड पहुँचने पर अपने सार्वजनिक कार्यों और धर्म संबंधी उदार विचारों के कारण वहाँ उनका अभूतपूर्व स्वागत और सम्मान हुआ। वहाँ उन्होंने लगभग तीन वर्ष तक रहकर अनेक भारत हितकारी कार्यों को संपन्न किया और इंगलैंड की सरकार से इस देश में शिक्षा-प्रचार की उचित व्यवस्था करने का कानून बनवाया, जिससे इसकी शीघ्रतापूर्वक प्रगति हो सके। वहाँ भी उन्होंने इस कार्य में इतना परिश्रम किया कि अंत में उनकी जीवन शक्ति समाप्त हो गई। ११ सितंबर, १८३३ को इंगलैंड के अनेक विद्वानों के सम्मुख भारत की धर्मनीति, राजनीति और भविष्य के संबंध में तीन घंटे तक खड़े रहकर वार्तालाप किया। दूसरे ही दिन उनमें थकावट के चिह्न दिखाई पड़ने लगे और वे ज्वरग्रस्त होकर शैयागत हो गये। वहाँ के डॉक्टरों ने उनकी पूरी चिकित्सा की और कुमारी कारपेंटर तथा कुमारी हेअर आदि ने बड़ी लगन के साथ दिन-रात उनकी सेवा-सुश्रूषा की। पर उनका ज्वर दूर न हो सका और निर्बलता बढ़ती गई, जिससे २७ सितंबर, १८३३ को वे परलोक को प्रयाण कर गये।

मुद्रक : युग निर्माण योजना प्रेस, मथुरा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org